भेंटों का खजाना



नई फिल्मी तर्जों पर देवी का यशगान

भेंटों का खजाना

अनुराधा पोंडवाल, महेन्द्र कपूर और शाम
दीवाना की गाई प्रसिद्ध माता भेंटें
(तारा रानी के जगराते सहित)



संग्रहकर्ता
रूपकिशोर

लक्ष्मी प्रकाशन

4734, बल्ली मारान दिल्ली–110006

फोन : 2917707

मूल्य : बारह रुपये





हे माँ मुझको ऐसा घर दे

हे माँ ! हे माँ ! हे माँ !
हे माँ मुझको ऐसा घर दे,
जिसमें तुम्हारा मन्दिर हो ।
जोत जगे दिन रैन तुम्हारी,
तू मन्दिर के अन्दर हो......
माँ ! हे माँ ! हे माँ ! हे माँ !......बोलो रे.....
जय माँ, जय-2 माँ जय-2 माँ.....

1. इक कमरा हो जिसमें तुम्हारा आसन माता सजा रहे
   हर पल हर क्षण भगतों का वहाँ आना-जाना लगा रहे
   छोटे बड़े का माँ उस घर में एक समान ही आदर हो
   हे माँ.......
2. उस घर से कोई भी खाली कभी सवाली जाए ना
   चैन न पाऊँ तब तक दाती, जब तक चैन वो पाए ना
   मुझको दो वरदान दया का, तुम तो दया का सागर हो
   जोत जगे दिन रैन.....हे माँ.....

3. हर इक प्राणी उस घर का माँ, तेरी महिमा गाता रहे
तू रखे जिस हाल में दाती, हर पल शुकर मनाता रहे
कभी ना हिम्मत हारे माता, चाहे समय भयंकर हो
जोत जगे..... हे माँ.....



माँ मुरादें पूरी कर दे

माँ मुरादें पूरी कर दे हलुआ बांटूगी-2
जोत जागाके सर को झुका के-2
मैं मनाऊंगी दर पे आऊंगी, आऊंगी, आ....ऊं....गी
संतों महंतों को बुलाके घर में कराऊं जगराता-2
सुनती है सबकी फरियादें मेरी भी लेगी माता-2
झोली भरेगी संकट हरेगी-2
मैं गाऊंगी, दर पे आऊंगी, मैं आऊंगी, आ....ऊं....गी
माँ मुरादें पूरी.....
विनती सुनो शेराँ वाली माँ खड़ी मैं बनके सवाली
झोली भरो मेरी रानी माँ गोद है लाल से खाली
कृपा करो गोदी भरो-2
मैं दर पे आऊंगी, मैं मनाऊंगी, दर पे आऊंगी,
आ...ऊं....गी माँ मुरादें पूरी.....
भवन तेरा है सबसे ऊंचा माँ और गुफा तेरी न्यारी

भाग्य विधाता जोतां वाली माँ कहती है दुनिया सारी
गाती तुम्हारा लेके सहारा-2
मैं दर पे आऊंगी, मैं मनाऊंगी, आऊंगी, आ-ऊं-गी
माँ मुरादें पूरी.....
कृपा करो वरदानी माँ छाया है गम का अंधेरा
तेरे सिवा मेरा कोई न मुझको भरोसा है तेरा
भाग्य जगा दे बिगड़ी बना दे-2
मैं दर पे आऊंगी, मैं मनाऊंगी, आऊंगी, आ-ऊं-गी
माँ मुरादें पूरी......



तेरा दर्शन करने आऊँ

तेरा दर्शन करने आऊँ लोग कहें 'जय माता की'-2
तेरा दर्शन करने आऊँ लोग कहें 'जय माता की'-2
ऊंची लम्बी तेरी चढ़ाई पहले बहुत डराती है
सबको देने वाली सहारा बांह पकड़ ले जाती है
जब भी कदम मैं आगे बढ़ाऊँ लोग कहें 'जय माता की,
कर्मों वाले ही दाती पौड़ी तेरी चढ़ पाते हैं
अर्श से लटकी है ये सीढ़ी देवता आते जाते हैं
आता जाता शीश झुकाऊँ लोग कहें 'जय माता की'
तेरा दर्शन करने......

माँ के जयकारे में ही सब वेदों का सार है
शक्ति के जयकारे में ही शक्ति माँ की अपार है
जब तेरा जयकारा बुलाऊं लोग कहें 'जय माता की'
तेरा दर्शन करने......

जो भी माँ का ध्यान लगाए माँ के ध्यान में आता है
जो गुण भोली माँ के गाए वो गुणवान हो जाता है
जब-जब तेरी भेटें गाऊं लोग कहें 'जय माता की'
तेरा दर्शन करने.....

जगमग ज्योति लागे जैसे मैया पास बुलाती है
तन पड़े उजाला लगे ज्वाला गले लगाती है
जब भी तेरी जोत जागऊं लोग कहें 'जय माता की'
तेरा दर्शन करने......

फूलों जैसे फूलांरानी बच्चों को संभाल रही
पग-2 पे माँ शेराँ वाली विपदा सबकी टाल रही
'अतुल' मैया के दर्शन पाऊं लोग कहें 'जय माता की'
तेरा दर्शन करने......



मइया जी मेरा जी करदा

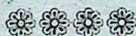
मइया जी मेरा जी करदा तेरे दर दी खाक हो जावां
मैं चरनी लगाके पाक हो जावां मइया जी मेरा.....

मैं लखखां जन्म गंवाये, मैया जी तेरे दर्शन नूं
मैं मुड़-2 जग विच आवां, दाती जी तेरे परशन नूं
मेरे नैन दी प्यास बुझा दे, भवानी मैं खैर दीद दी पावां
मइया जी मेरा.....

तेरी फूलवारी विच, मैया जी फूल बन महकां मैं
तेरे गुन गावां हर वेले, पंछी बन चहका मैं
बना बदल द्वारे बस जावां, मैं मल-2 धोवां तेरिया राहवां
मइया जी मेरा.....

तेरी मेहर होवे महारानी, किरन बन बन जावां मैं
तेरी चरण हुन कल्याणी, मंदर तेरे आवां मैं
मेरी ऐहो विनंती है दाती, मैं बनके जोत जगां दिन राती
मइया जी मेरा.....

मैनूं भव सागर विचों तार, पार कर बेडी मेरी
तू कर मेरा उद्धार, शरण आया मैं तेरी
रहे 'प्रेम' माँ तेरा भिखारी
दाती जी तेरे चरण कमल दा पुजारी
मइया जी मेरा.....

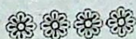


बेटा जो बुलाए माँ को आना चाहिए

मैया जी के चरणों में ठिकाना चाहिए
बेटा जो बुलाए माँ को आना चाहिए

सुन लो ऐ माँ के प्यारो , तुम प्रेम से पुकारे
आयेगी शेराँ वाली, जगजननी शेराँ वाली
वो देर ना करेगी, झोली सदा भरेगी
पूरी करेगी आशा, मिट जाएगी निराशा
बिगड़े कर्म संवारे, भव से वो सबको तारे
ओऽऽऽ श्रद्धा और प्रेम से ध्याना चाहिए-
बेटा जो बुलाए माँ को आना चाहिए......
विनती सुनो हमारी, ऐ मैया आदकंवारी
तेरे दर के हैं सवाली जाना नहीं है खाली
बैंठे हैं डेरा डाले, तेरे भक्त भोले-भाले
तेरे नाम के दिवाने, आए हैं जाँ लुटाने
मैया दिदार दे दो, बच्चों को प्यार दे दो
ओऽऽऽ हीरे मोतियों का ना खजाना चाहिए-
बेटा जो बुलाए माँ को आना चाहिए......
अकबर ने आजमाया, ध्यानूं ने था बुलाया
ऐ राजरानी आओ, अम्बे भवानी आओ
जाये न लाज मेरी, सुन लो आवाज मेरी
दरबार देखता है, संसार देखाता है
घोड़े का सर कटा है मेरा भी सर झुका है
गरूर अभिमानी का मिटाना चाहिए-
बेटा जो बुलाए माँ को आना चाहिए.......

त्रिलोक चन्द राजा था भक्त वो भी माँ
चोपड़ थी बिछाई, संग खेले महामाई
देखी जो बूंद पानी, कहने लगा भवानी
पानी कहाँ से आया, कैसी रचाई माया
कैसा ये माजरा है, मेरा तो दिल डरा है
माँ इसका राज खोलो, अब कुछ तो मुंह से बोलो
कहने लगी भवानी, ऐ मूढ़ अज्ञानी
मुझको न आजमाओ, पानी को भूल जाओ
जिद ना करो ऐ राजा, कुछ तो डरो ऐ राजा
बोला वो अभिमानी, मैंने भी मन में ठानी
ये राज जान लूंगा, हर बात मान लूंगा
तब मैया बोली राजा, न भूल जाना वादा
सच-2 तुम्हें कहूंगी, फिर पास न रहूंगी
सागर में डोले नैया, मेरा भक्त बोला मैया
हर दम तुझे ध्याऊं, फिर भी मैं डूब जाऊं
किश्ती बचाओ माता, रास्ता दिखाओ माता
मैं उसकी भी तो माँ थी, यहाँ भी थी वहाँ भी
'चंचल' सुना कहानी, गायब हुई भवानी
पछता रहा था राजा, चिल्ला रहा था राजा
शक्ति को ना कभी आजमाना चाहिए-
बेटा जो बुलाए माँ को आना चाहिए......



मईया जी तेरी माया अपरम्पार

मैया जी तेरी माया समझ न आये-2
सागर की गहराई का जैसे कोई अन्त न पाए-2
हम हैं सभी खिलौने तेरे, मैया लाल सलोने तेरे
नाम तेरे के हैं दीवाने, नाच रहे हैं शाम सवेरे
वो ही खेलें खेल भवानी जो तू हमें खिलाये-
मईया जी तेरी......

धरती, अम्बर, पर्वत, सागर, तेरे नाम से हुए उजागर
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, शीश झुकायें दर पे आकर
सूरज, चाँद सितारे कितने, कुछ भी गिना ना जाए-
मईया जी तेरी......

तू जगदम्बे तू है काली, भक्तजनों की तू रखवाली
तेरे नाम की महिमा गाए, पत्ता-पत्ता डाली-डाली
कहीं पे धूप कहीं पे छाया, क्या-क्या रंग दिखाये-
मईया जी तेरी......

निर्बल को बलवान करे माँ, निर्धन को धनवान करे माँ
सबकी इच्छा पूरण करती, जो भी तेरा ध्यान धरे माँ
'प्रेम' कहे मूर्ख और ज्ञानी तूने सभी बनाए-
मईया जी तेरी......



सच्ची है तू सच्चा दरबार तेरा

सच्ची है तू, सच्चा तेरा दरबार माता रानिये
कर दे दया की एक नजर एक बार माता रानिये
जै जै माता रानिये......
क्या गम है कैसी उलझन जब सर पे तेरा हाथ है
हर दुख में हर संकट में माता तू हमारे साथ है
तू प्यारी माँ और जग तेरा परिवार, माता रानिये–
सच्ची है तू......
एक दो नहीं लाखों यहाँ, आए बनाकर टोलियाँ
अपनी जुबान खोले बिना भरकर गये हैं झोलियाँ
हर सुख मिलता है करके तेरा दीदार, माता रानिये-
सच्ची है तू......
तेरी दया की बूंद भी ममता की एक सागर बने
पत्थर कई हीरे ऐ माँ दर को तेरे छूकर बने
जन जन पें है तेरा बड़ा उपकार, माता रानिये-
सच्ची है तू......
प्रेम की ज्योति जला हर दिल से नफरत को मिटा
रोते हुए बिछड़े हुये भाई से भाई को मिला
युग युग तेरी पूजा करे संसार, माता रानिये-
सच्ची है तू......



जंगल के राजा

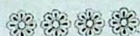
ओ जंगल के राजा, मेरी मैया को लेके आजा
मैंने आस की जोत जगाई
मेरे नयनों में माँ है समाई
मेरे सपने सच तू बनाजा
मेरी मैया को लेके आजा-
ओ जंगल के राजा......
हर पल माँ के संग विराजो धन्य तुम्हारी भक्ति है
शक्ति का तुम बोझ उठाते गजब तुम्हारी शक्ति है
तेरे सुन्दर नयन कटीले ओ रंग के पीले-पीले
मेरी माँ को मुझसे मिला जा-
ओ जंगल के राजा......
पवन रूपी माँ के प्यारे, चाल पवन की आ जाओ
देवों की आंखों के तारे, आओ कर्म कमा जाओ
आ गहनों से तुम्हें सजाऊँ पावों में घुंघरू पहनाऊँ
मैं बजाऊँ ढोले और बाजा-
ओ जंगल के राजा......
पाके सम्मुख भोली माँ को दिल की बातें कर लूं मैं
प्यास बुझा लूं जन्मों की और खाली झोली भर लूं मैं
माँ के चरणों की धूल लगा लूँ, मैं सोया नसीब जगा लूँ

मेरे दुःख सन्ताप मिटा जा-

ओ जंगल के राजा......

माँ कहेगी बेटा मुझको, मैं माँ कहके बुलाऊँगा
ममता रूपी वरदानी से, वर मुक्ति का पाऊँगा
सारी दुनिया से जो न्यारी, छवि सुन्दर अटल प्यारी
उस माँ का दर्श दिखा जा-

ओ जंगल के राजा.....



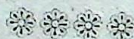
जा उड्ड जा वे पंछिया

जा उड्ड जा, उड्ड जा, उड्ड-उड्ड जा, पंछिया वे जा
माता दे द्वार, मेरी पुकार, जाके देवीं तू..... सुना होऽऽऽ

जा उड्ड जा.......

आखीं जरा सिरनूं झुका, बैठा तेरी राह कोई नैन बिछा
राजिक हैं जे ते रजा बन के आ-2
मेरी मुश्किल' च मुश्किलकुशां बन के आ
सहारा दे अपना परेशान हां मैं, सहारा दे-
बेसहारयां नूं सहारा दे
डर ते डिगया नूं सहारा दे
आपने भगता नूं सहारा दे

सहारा दे अपना परेशान हां मैं, आ सुनके मेरी सदा-
जा-जा (जा-जा-जा-जा) जा उड्ड जा, उड्ड जा...
पर ना मेरे, पल्ले जर ना मेरे, आवां किवें दाती मैं तेरी जगह
मैं हां किते, तेरा दर है किते ? मैं किते, तेरा दर किते
मेरा सिजदा ते तेरी नजर है किते
तड़पदा ए दिल ते रूलावन एह आखियां
आंसू दे दरिया बहा-
जा-जा (जा-जा-जा-जा)-2 जा उड्ड जा, उड्ड जा.....
मेरा ए मन, होक मगन, ज्योति लगन दी बैठा जगा
जलवे दिखा दे किसे नूर दे चमकदे सितारे किते दूर दे
ए आवाज सुन नाज बेकल दी मैया-मेरी आवाज सुन-
मुकद्दर दी हस्ती मिटा-
जा-जा-जा-जा उड्ड जा, उड्ड जा.....
तैनूं चूरियां खवावां
तेरे तरले मैं पावां
मेरे सुनया पुजादे
तैनूं देवां मैं दुआवां
जा-जा (जा-जा-जा-जा)-2 जा उड्ड जा, उड्ड जा.....
माता दे द्वार, मेरी पुकार, जाके देवी लूं सुना.....



कव्वाली

इशारा तेरी रहमत का अगर इक बार हो जाए
तो फिर इस उजड़े 'गुलशन' में गुली-गुलजार हो जाए
हो सुबह पीता हूँ शाम पीता हूँ
हो चूर मस्ती में माँ तेरे नाम का जाम पीता हूँ
इशारां तेरी रहमत का.....

हो मूर्ख बन्दे मन्दिर विच जोत जगाई ते की होया
जे मन्दिर विच घण्टे खड़काए ते की होया
ओ मूर्ख बन्दे जे मन अपना साफ न कीता
ते लम्बे तिलक लगाय ते की होया
इशारा तेरी रहमत का.....

हो इधर मन्दिर उधर गुरुद्वारा
इधर मस्जिद उधर गिरजा
इधर गिरजा उधर गिरजा
जिधर चाहे तू उधर गिरजा
इशारा तेरी रहमत का.....

हो अम्बे मैया तेरी जय जयकार



जागो माँ जागो

जागो हे जगदम्बे ! जगो हे जगदम्बे !!

जागो हे दुर्गे माँ ! जागो प्रतिपाला !!
भक्तजनों ने तेरे दर पे डेरा डाला-
जागो ! माँ जागो !..........
जागी तुम्हारे भक्त तुमको जगाएं
आओ माँ लाल तुम्हें रो-2 बुलाएं
ज्वाला है नाम तेरा, तेज है निराला
जागो ! माँ जागो !..........
जगो दिलों के अन्धकार को मिटा दो
भटके हुओं को मैया रोशनी दिखा दो
अपनी ही ज्योति का करके उजाला-
जागो ! माँ जागो !..........
सारा जमाना हुआ जोत का दिवाना
मैया हम चरणों में मांगे ठिकाना
जिस पर नजर मैया, उसका बोलबाला-
जागो ! माँ जागो !..........
शेर पे सवारी माँ, अष्टभुजा वाली
दुष्टों की काल मैया, भक्तों की रखवाली
नयनों में तेज तेरे, गले मुण्डमाला-
जागो ! माँ जागो !..........



तारा रानी की कथा





आय इक इतिहास याद सी एक महा बलकारी
श्रद्धा वान ते दानी भारी जांण दी एह दुनिया सारी
जगदम्बे माँ दासी सेवक, पन्डता ताई बुलाया ए
कट्ठाकर परिवार ओ सारा हवन यज्ञ करावाया ए
हो प्रसन्न माता जगदम्बा विच सपने दे आंदी ए
लड़कियां दो तेरे घर होणियां माता आख सुनांदी ए
वंश तेरा चमकेगा राजा मां दी शक्ति फरमांदी ए
दे वरदान जगत जननी मां अन्तर्ध्यान हो जांदी ए

दोहा

धन धन माता वैष्णो कर दी जो कल्यान
भगतां दे घर आंवदी महिमा अजब महान
संत भक्त बोलो जय माता दी जय माता दी

वार्ता

भक्त जनो स्पर्श राजा के यहाँ कोई सन्तान न थी। दोनों पति पत्नी बूढ़े थे और निराश हो चुके थे।

परन्तु वे महारानी जग जननी जगरानी के भगत थे और साल में दो बार दुर्गा मां का जागरण हवन जरूर करते थे । अब जब कि यज्ञ समाप्त हुआ तो रात को स्पर्श राजा के स्पप्न में मां दुर्गा ने दर्शन देकर कहा राजन हम तुम्हारी श्रद्धा भक्ति से बहुत प्रसन्न हैं । मैं तुम्हें वरदान देती हूँ कि तुम्हारे घर दो कन्याएँ ऐसी पैदा होंगी । जब तक चांद सितारे, पृथ्वी आकाश रहेंगे, तब तक आपका नाम भी अमर रहेगा । इतना कह माता अन्तर्ध्यान हो गई । दसवें महीने की सुबह चार बजे कन्या का जन्म हुआ तब वजीर ने आकर स्पर्श राजा को खुशखबरी सुनाते हुए कहा......

बतर्ज-हीर बादशाह

तड़के उठदयां सार वजीर आके
आ राजे नू खबर सुनाई वेखो
रूप चैन ते सूरज नू मात करदा
ऐसी कन्या है घर जाई वेखो
राजा सुन के गल प्रसन्न होया
लोकां दितियां आंण बधाई वेखो

एबै दिसदी जीवें आई दुर्गा
'लालचन्द' ने खुशी मनाई वेखो

बतर्ज-हिदायत

पण्डित खोल पोथियाँ कहंदे तारा नाम कुमारी दा
अमर नाम हो जांदा राजन तेरी राजकुमारी दा
दो साला दे बाद राजे घर दूजी कन्याँ जाई ए
कुदरत कीता रंग साँवला कैसी खेड़ रचाई ए
नमस्कार चरननविच करके पतरा तैयार कराँदा ए
करन विचार ज्योतिष लगन नजर जो आँदा ए
पतरा करके तैयार ओ कहदे दसदेयाँ दिल घबराँदा ए
हाथ जोड़ राजा ए कंहदा क्यों चक्कर विच पाँदे ओ
खोल के सारा हाल सुनाओ देर भला क्यों लाँदे ओ

वार्ता

अब राजा गुरु तथा सब मिलकर स्पर्श राजा की कन्या का जन्म पतरा टेवा कुंडली पढ़कर सुनाते हैं। इस कन्या के पिछले जन्मों की सारी कहानी सुनाते हैं कि यह कन्या पिछले जन्मों में क्या थी? राजगुरु पण्डित कह रहे हैं.....

वही तर्ज

पक्का दिल करके सुन राजा पंडता आख सुनाया ए
नीच घराने विच इस जाणा किस्मत खेल खिलाया ए
ज्योतिष विद्या दे बल राजा सारी गल सुनावां मैं

लड़की के पिछले जनमां दा खोल के भेद बतावां मैं
इक दिन नाल वजीर लै राज़े खेलण तू शिकार गया
हत्थ शिकार न लगा कोई बैठ जंगल विच कार गया
ओधार कपला गऊ इक आई मंत्री लै हत्यार गया
गुरज मारेया सी पापी ने न खाली है वार गया
लगदेयाँ सार ओह गऊ मर गई राजया तू घबरायासी
हो नाराज वजीर नूं अपने, शहरों झट कढ़वाया सी
सदके फेर तू पन्डता ताई, हवन यज्ञ करवाया सी
चरण धोए चरणामृत पीता, रो रो हाल सुनाया सी
वस्त्र भोजन, दान, दक्षणा, देण लई मंगवाया सी
पकण लग्गे पकवान हजारां, भारी यज्ञ रचाया सी
सुण के गल वजीर ने देखो, रूप विप्रदा धार लेया
नाश करां मैं राजवंश नूँ मन अपने एह विचार किया
नाग जहरीला नाल ओह लैके झटपट हो तैयार गया
हत्थ सोटी वन लंगोटी, पहुँच महल विच कार गया
भरे कड़ाहे खीर दे देखे, झट कढ़ के सप्प पाया ए
हूण देखा मैं राजा ताई, मन अन्दर मुस्काया ए
कपलागऊ तो बनी छपकली, वजीर नूँ जान गई रिझदी
खीर विच छाल आ मारी, दे अपणे ओ प्रान गई



कड्डी खीर कडाहि च्चों झट संगता दे बरतान लई
गुस्से हो रिशीयां ने आखया छपकली जंदी ध्यान पई
नीच दुष्टनी भोजन सारा करके खराब तमाम गई
हुक्म कीता तू फौरन राजे भोजन बाहर सुटांण लई
देखया विच पिन्जर इक सपदा नीर अक्खां ने बहाया सी
मोह ममता दा सागर तेरे हृदय उमड़ के आया सी
दिला शाप बेहोशी ताई दिल तेरा घबराया सी
माफ करो माता जगदम्बा चरनाँ शीश निवाया सी
ओहियां कनयां वण के राजा हुँण तेरे घर आई ए
पलनां एहन नीच घरान किस्मत खेल लिखाई ए
जांदी कदे ने शाप है खाली थावे लक्ख विचार करो
अपना धर्म बचावण खातिर मन्नो गल लत्वार करो

वार्ता

राजा ने कहा महाराज क्या उपाय है जिसके करने से इस शतयां का श्राप टल जाए बताइए। तब राजगुरू ने कहा राजन वा लिखि नहीं टल सकता क्योंकि ऋषि मुनियों ने श्राप दिया है । केवल एक ही उपाय है जो आप इस आने वाले कलंक से बच सकते हैं । आप एक सन्दूक बनवाइए और इसकी परवरिश के लिए हीरे, लाल, जवाहरात इसमें डाल कर बन्द करके नदी में बहा दें । इस तरह आप जीव

हत्या से भी बच जायेंगे और कलंक से भी । तब राजा ने कहा :

वही तर्ज

लक्कड़ दा सन्दूक मगां के हीरेयाँ जड़त जड़ाया ए
जवाहरात मोंहरा दराजे विच अम्बार लगाया ए
मखमल मोतियां नाल सजाके विच बिस्तर लगवाया ए
दिल दा टुकड़ा विच बन्द करके दिल पे पत्थर पाया ए
चुक संदूक पंडित राजे विच दरया दे पा दित्ता
रूड़दा देख संदूक राजेया अक्खियाँ नीर बहा दित्ता
मारे कोण जिहनू माँ रखे जल विच आण समाई ए
हत्था नाल सम्भालया दाती ऐसी कला दिखाई ए
बेला झट प्रभात दा होया सुन्दर शहर नजर आया
कर स्नान रहा इक ब्राह्मण देख संदूक ओ ललचाया
देख रहा सो आसे पासे भील नजर इक है आया
मारी झट आवाज भील नू पास सी अपने बुलाया
कैरदा वेख संदूक जा रेहा, कड़ औह वाहर लियाना ए
भील आखे जो निकले विचो सोइयो मैं ले जाना है
झट जा कढ़ संदूक लियांदा वेखया रबद भाना है
कनयां इक विच विट तक्के, डाला रूप सुहाना ए
घर ओदे संतान नहीं सी ममता घेरा पाया ए
मालिक दा लख शुकर ओ करदा, जिसने मेल मिलाया

चुक कनयां उस जल नाल जाई, दिल फुलेया न समाया
जवाहरात मोहरा बन पल्ले, देखो घर नू आया ए
सारा हाल आ दसया भील ने, नारी न समझान लग्गा
कनयाँ ओदी झोली पाके, गीत खुशी के गान लग्गा
मंगल गाँवन मिल के दोनों चमके 'लाल' सितरे ने
पल विच किस्मत बदल ओह देवे रब्ब अजब नजारे ने

वार्ता

भील की स्त्री कन्या को पाकर फूली न समाई। बुढ़ापा छा गया था। संतान ही न थी। जब कन्या छाती से लगाई दिल से पुकार उठी कि ऐ मां जब तूने कन्या बख्शी है तो एक मेरी इच्छा भी पूरी करो। मेरी अब एक ही आपसे प्रार्थना है कि मेरी इन सूखी छातियों से दूध की धारा निकले जिसे मैं कन्या को पिलाऊँ।

तर्ज-हीर भीलनी की विनती

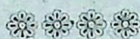
सीने नाल लगाए के कनयां नू
नार भील दी पई अरदास कर दी
बे औलाद सी कनयां बख्श के मां
बे निराशयां दी पूरी आस कर दी
भरे रहमताँ दे ने भण्डार औदे
सुणेयां 'लाल' न कदे निराश कर दी

सुक्खी छातियां विच दूध आँण भरया
सारे काम दायी आये रास कर दी

वतर्ज-हिदायत

पलण लग्गी ओ राजकुमारी-किस्मत खेल नियारी जी
प्यारा नाम रुकमणी रखया-लगदी बहुत प्यारी जी
दिन दूंणो ते रात चौगणी-घर भीलां दे जवान होई
अण्ड मांस मछलियां खांदी-शादी उसकी आन होई
रीत रिवाज पूरे सब करके-बिच डोली ते पाई ए
लै डोली ओह लड़का ले गया-जित्थे तारा बिहाई ए
किस्मत अपनी अपनी होंदी-बदल न सकदी रईया
राणी इक राजा दो कैंहदे-इक भीलां परनाईए
परस वैशनों अम्बा दी नित-तारा भेंटा गोदीए
औधार रुकमणी नाल छरीनित-बकरेयां दें सिर लहांदीए
तारा किशमिश अते छहारे-मां दी भेंट चढ़ा दिये
रुकमणी पास टोकरे पाके-बेचन शहर नूं जादी ए
हरि चंद राजे दी ताई-तारा आंख सुनाँदी ए
जगराता मां दा करना-पति तो आज्ञा पादी ए
डल फेज तारा रानी फिर-मैंहलों भगत बुलांदी ए
भगतां ने आ भेंटा गाईयां भेंट प्रभात हो जाँदा ए
उस दिन सुबह सवेरे रुकमणी मांस बेचने आई सी
निज मैंहलां ढालक ते छड़यां झड़ी अनौखी सीलई

जै अम्बे जै दुर्गा दी सुन, मसती दिल विच छाई सी
नमस्कार कर रुकमणी बैठी अन्दर जांण न पाई सी
सुन सुन भेंटा नींद आ गई किस्मत गेंडा खाया ए
कृपा महा माया दी होई सुतेया नसीब जगाया ए
भूल गई मांस बेचना देखो, सत्संग रंग जमाया ए
पल विच करे निहाल ओ दाती अद्भुत उसकी माया ए



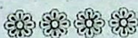
लै लै प्रसाद मईया दा दुनियां घर नूं आँदी ए
पैरा हीं आएज सुणी झट बैठ रुकमणी जांदी ए
संगत चली गई जद सारी तारा वेख बुलादी ए
कोण जान की नाम है तेरा कोल बैद दी जांदी ए
सुण के गल भर नैन ओह रोई मैं मांसा हारी हाँ
लोग अछूत ते नीच ही कह दे गल मैं दस दी सारी हां
दिल मेरा बोलण नू करदा फंस गई विच लाचारी हां
तारा कहदी दस गल मैंनू रुकमणी भैंण प्यारी जी
रुकमणी रो रो अरजां कर दी गल सुनो राजकुमारी जी
जगराता मइया दा करना ए हो दिल विच धारी जी
मैं सुणैया ओह प्रेम दी भूख कहै दुनियां सारी जी
कीवें एह जगराता हों दा नियम कुछ समझाओ जी
की कुछ करना पैदा राणी खोल के गल सुनाओ जी
रानी शुद्ध प्रेम देख के रुकमणी नू समझान लगी

जगराता दा भेद ओह सारा मुखो करन बियान लगी
लै के डग भगतां सनतां तू रुकमणी आप पहुँचने लगी
मईया ने फिर भगत प्यारे टुर तेरे लर आणै ने
करन आपे प्रचन्ड ज्वाला फिर छैणै खड़काण ने
'लालचन्द' जदों भेंटा गावण खुल नसीब झट जाणे ने



रुकमणी कैंहदी रानी जी तुसा मेरे घर वी आणा ए
घर मेरे जगराता अपनी हत्थी तुसां करना ए
रानी कहंदी आवांगी जे दाती नूं मन्जूर होया
हत्थजोड़ फिर रुकमणी कहंदी दिलचौ भरम है दूर होया
छेती-छेती घर ओह आके पति ताइ समझान लग्गी
जगराते दा किस्सा प्रेम दे नाल सुनान लगी
आँखें खोल पति रुकमणी दा क्यों करदा नादानी ए
भीलां दे घर भगत न आणे न आ सकती रानी ए
धर्म सनातनी राजा पक्का पूरन ब्रह्म ज्ञानी ए
नीचे जात साड़ी है रुकमणी पैदा कोई न पाणी ए
धारण पकड़ फिर पति नू कैंहदी बल भगतां दे जावां मैं
सुखना सुखी जगराते दी आज किस्मत अजमावाँ मैं
भगता कोल लैके पहुँची खोल के गल सुनावाँ मैं ।
किस भगत ने डल लए न रुकमणी मैंहला आवदी ए
देख के तारा रुकमणी नाई, जै मईया दा बुलाँदी ए

जगराते दे डल ओह लैके, मस्तक नाल लगा दीए
रुकमणी डल तारा नूं देके, लख शुकर मना दिए
केहड़ी गली चधर है रुकमणी, तारा ने फरमाया ए
सुन के पिता सी दिल घबराया, डेरा दूर तू लाया ए
डल देके तू भैंण रुकमणी, मील चक्कार विच पाया ए
कोशिश करांगी पूरी रुकमणी, अग्गे उस दी माया ए



गल्ला सुन लईया निन्दकां ने, राजा नू फड़कान लग्गी
भीलां दे घर जगराता है, सारा हाल सुनान लग्गी
मांस मछलियाँ खाण ओह सारे, गल्लां खूब बनान लग्गी
राणी अज दर्शन नू जावे पवाड़े पांन लग्गी
धर्म कर्म सब नष्ट हो जावां, प्रजा पतित हो जायेगी
राजा मन अपने कैंहदा, तारा जांण न पायेगी
लै कटारा ऊंगल नू पछिया, मैहल दे विच आए जी
तारा भोजन परस के दीत्ता, बैठ प्रेम नाल खाए जी
लेट गया फिर पलंग दे उत्ते नींद न उसनू आए जी
ज्यों-ज्यों रात. गुजर दी जांदी, तारा पई घबराए जी
जाना आज दुश्वार हो गया, पेश न कोई जाए जी
लाज नूहिया रखनी जगदम्बा, रो रो आँख सुनाए जी
बिच मझधार है मेरी नईया आ हुण पार लगा दे माँ
रुकमणी दे घर जागा तेरा, विच जागे पहुँचा दे माँ

प्रेम प्यारे श्रद्धा नाल रानी, माँ दा धयान जो लाँदी ए
पति अपने नूँ सुतेया देख के, झट तैयार हो जांदी ए
महाँ माता दी कृपा होई, महलों निकल के आंदी ए
चौकीदार न जान सके कुछ, तारा खुशी मनाँदी ए



गली बाजार शहर तो निकली, विच जंगल जदो आई ए
चोर दो सामने आँदे देखे मन दे विच घबराई ए
खींच तलवार लई डाकू ने, तारा चीखां मारे जी
लाज रखी अज मईया मेरी, दाती ताई पुकारे जी
वैष्णो माँ भटबनके कालका, इक पल विच आजाँदी ए
खन्डा मार दोधारा देखो, पापी दा सर लाँहदी ए
भज्जी दौड़ी रुकमणी दे, घर तारा रानी आई ए
हीरे पन्ने नाँ जड़त सी जुत्ती, विच डियोड़ी देलाही ए
सीरे उढ़ीक रुकमणी नू भारी, वेखके गल नाल लाई ए
जै माता दी प्रेम नाल, सनता भगताँ ने बुलाई ए




कीर्तन

जै माता दी, जै माता दी बोल मन बावरे
बोल मन बावरे, न डोल मन बावरे

राजे दी घर अक्ख खुल गई तारा नजर आई जी
गुस्से नाल मुँह लाल हो गया, हत्थ तलवार उठाई ए
चौकीदारां कोलों पुछया, पता न लगता राई ए
तारा तारा पेया पुकारे अज शामत तेरी आई ए
छेती छेती नाल गुस्से ओ, शहरों बाहिर आया सी
लाश चुकी इक जाँदा रही, दूरों नजरी आया सी
राजा आखे ऐस वेल एह, लाश तू कित्थों लि आया
डाक चरनी शीश निवा के सारा हाल सुनाया
अरज सुनो महारानी मेरी, नारी रात इक आई सी
लुटंन दी खातिर इस राजा कढ़ तलवार चलाई सी
माता कैंहदी दौड़ी, साढ़े हत्थ न आई सी
काल रूप ओ कालका बनके, गर्दन ऐहदी लासी सी
राजा आखे केहंडे रस्ते लारी दम खाँन होई
हत्थ बन आखे मैं की जान, आपे जानीं जान गई
अपने मन ही राजा वेखाँ, अग्गे तुरजा जाँदा ए
ढोलक छैन बाजे सुन के, जलदी कदम उठाया ए
वक्त सुबह प्रभात दा होया, चिड़ियाँ चूँ चूँ लाई सी
ओधर भगताँ रुकमणी दे घर, भेंट अनोखी गाइ सी
आरती कर जगदम्बा दी ओह भीलताई फरमाँ देने
लै प्रशाद भगत जी आओ, दे आवाज बुलां देने
झट चुक के ओह थाल भील ने, माँ दी भेंट चढ़ाया ए
भगतां भोग लवायां माँ नू, उत्ते कपड़ा पाया ए

औधर राजा लाहर खलौता, अन्दर जान न पाया सी
क्रोध ओदे मन दूणाँ होया, बन्द बूहा जदों पाया सी
बोटी-बोटी करके बकरा, जो प्रसाद बनाया सी
वर्क सुनहरी ला ला के, इक थाल दे विच सजाया सी
पहले पहल रानी दी झोली, दे विच भर बुक वाया ए
काली रूप धारा महारानी ने, आ भोग लगाया ए
कुछ खाया कुछ झोली पाया निकल के बाहर आई सी
पति अपने नु देख के तारा, मन अन्दर घबराई सी
राजा झट रानी नू कैहदां झोली विच कि पाया ए
हत्थ वन आखें मैं की जान, आपे जाना जान गई
अपने मन ही राजा वेखां, अग्गे तुरजा जांदा ए
ढोलक छैन बाजे सुन के, जलदी कदम उठाए ए



वक्त सुबह प्रभात दा होया, चिड़िया चूं चूं लाई सी
ओधर भगता रुक्मणी दे घर, भेंट अनोखी गाइ सी
आरती कर जगदम्बा दी ओह, भीलताई फरमाँ देने
लै प्रसाद भगत जी आंओ, वे आवाज बुलां देने
झट चुक के ओह थाल भील बे, माँ दी भेंट चढ़ाया ए
भगतां दी लुवायां माँ नू, उत्ते कपड़ा लाया ए
औघर राजा बाहर खलौता, अन्दर जान न पाया सी
क्रोध ओदे मन दूणाँ होया, बन्द बूहा जदों पाया सी

बोटी बोटी करके बकरा, जो प्रसाद बनाया सी
वर्क सुनहरी ला ला के, इक थाल दे विच सजाया सी
पहले पहल रानी दी झोली, दे विच भर बुक वाया ए
काली रूप धरा महारानी, ने आ भोग लगाया ए
कुछ खाया कुछ झोली पाया निकल के बाहर आई सी
पति अपने नु देखके तारा, मन अन्दर घबराई सी
राजा झट रानी नू कैहदां झोली विच कि पाया ए
हत्थ बन आँखें मै की जान, आपे जाना जान गई
अपने मन ही राजा वेखां, अग्गे तुरजा जांदा ए
ढोलक छैन बाजे सुन के, जलदी कदम उठाए ए
वक्त सुबह प्रभात दा होया, चिड़ियाँ चूं चूं लाई सी
ओधर भगतां रुकमणी दे घर, भेट अनोखी गाइ सी
आरती कर जगदम्बा दी ओह, भीलताइ फरमाँ देने
लै प्रसाद भगत जी आओ, दे आवाज बुलां देने
झट चुक के ओह थाल भील ने, मां दी भेंट चढ़ाया ए
भगतां दी लुवायां माँ नू, उत्ते कपड़ा लाया ए
औधर राजा बाहर खलौता, अन्दर जान न पाया सी
क्रोध ओदे मन दूणाँ होया, बन्द बूहा जदों पाया-सी
बोटी-बोटी करके बकरा, जो प्रसाद बनाया सी
वर्क सुनहरी ला ला के, इक थाल दे विच सजाया सी
पहले पहल रानी दी झोली, दे विच भर बुक वाया ए
काली रूप धारा महारानी ने, आ भोग लगाया ए

कुछ खाया कुछ झोली पाया निकल के बाहर आई सी
पति अपने नु देख के तारा, मन अन्दर घबराई सी
राजा झट रानी नू कैहदां विच कि पाया ए
आधी रात भीलां घर आके, कुल नू दाग लुआया ए
धर्म कर्म सब भूल गई 'तारा' सिर हुण लाहवां मैं
हत्थ जोड़ तारा ऐह केंहदी, घर चल्लो हाल सुनावाँ मैं
मैं को जाँणा की वे आई, दाती ले आई ए
भुल्लां बख्श देयो स्वामी जी, एहो आश लगाई ए
अर्ज मेरी मन्नों मेरे स्वामी, झोली बन्द ते खोलो जी
मैं दासी हां आद शक्ति दी लाज मेरी न दोलो जी





भेंट



विनती तारा रानी की

राखो-राखो माँ लाज हमारी
कि तारा रानी, कि तारा रानी अरज करे,
तेरे चरन कमल पे मैं वारी, कि तारा रानी अरज करे,
राखो-राखो माँ लाज हमारी
तेरे चरनों में शीश झुकाऊँ माँ
आ जा दुखड़े मैं अपने सुनाऊँ माँ सुनाऊँ माँ

मैं तो दासी तेरी, मैं तो दासी हूँ अम्बे तुम्हारी
कि तारा रानी अर्ज करे ।
राखो-राखो माँ लाज हमारी ।
झोली खोलकर कैसे दिखलाऊँ माँ, दिखलाऊँ माँ
नहीं माने मेरी, नहीं माने मेरी, मैं तो हारी
कि तारा रानी अरज करे,
राखो राखो माँ लाज हमारी
सुना बिगड़ी तू सबकी बनाए माँ, तू बनाए माँ
देरी आज फिर काहे को लगाए माँ तू लगाए माँ
देखे लीला तेरी, आज लीला देखे नर नारी
कि तारा रानी अर्ज करे
राखो राखो माँ लाज हमारी
आके दर्शन सब दिखलाओ माँ दिखलाओ माँ
'लालचन्द' तेरी लालचन्दे तेरी महिमा उचारी
कि तारा रानी अर्ज करे
राखो राखो माँ लाज हमारी

बर्तज हिदायत

गुस्से दे विच आ राजे ने साहणी सिर तों लाही ए
झट प्रचण्ड हो आद कंवारी, कला अजीब दिखाए
लहु-सी केसर रोली बणयां
मांस कड़ाह भंगूर होया

हड्डियाँ फुर मखाने बन गये
दाती न मंजूर होया
गिरि छुहारे लचियाँ वाकी
बणेयाँ जो दस्तूर होआ
लालाचन्द पर राजा कहंदा

राणीये भरम न दूर होया

मैहलों खिच लयांदी तारा, आँखें अजनावा मैं
कौवें शेर ते चढ़-चढ़ आंदी, जगराता करवांवा मैं
परम वशनों में हाँ तारा, समझ लै गल समझावां मैं
घोड़ा नीला कटके राणी, हत्थी भोग लुआवा मैं
फेर मैं मन्नांगा तेरी दाती जे अज कला दिखाएगी
मेरे नीले घोड़े नु जे जिन्दा करके जाएगी
भैजया झट सनेहा राजे भगतां ताई बुलाया ए
विच मैहलों दे माता दा दरबार आप सजवाया ए
तारा हो उदास रोंवदी मां दी मन्नत सनांदी ए
हत्थ जोड़े करे विनतियाँ ओ बैठ के भेंटां दी गांदी ए
अपनी दासी के ही सुन विनती पवन रूप धार आई माँ
बोल पई तारा दे मुखों अजब कला दिखलाई माँ
हरिश्चन्द राजा गल सुन लै जे मैंनू अजमाया ए
बे जबान घोड़े दी राजा काहनूं बेली चढ़ाया ए
टुकड़े घर तू अपने पुत्र देखे दुनियाँ सारी वे

दुर्गा नू अजमाया जे तू करलै झट तैयारी वे
जिद्दी राजा गल न समझया, मुख क्रोध विच आया च
अपने प्यारे पुत्र नू झट, दे आवाज बुलाया ए
मांस पकाओ तारा रानी, विच देगा दे पाया ए
तारा करे विनती अक्खियाँ, छम छम नीर बहाया ए
गुजरी रो रो रात तारा दी, चैन न इक पल पाया ए
भगतां ने भी गीत सुहेजा, झट प्रभात दा गया ए
राजे ने झट कपड़ा जा जा प्रसाद उत्तों आ लाहया ए
पुत्र दी उसनू याद आई मांस वेख घबराया ए
राजे दे मन क्रोध आ गया, कढ़ तलवार लिआया ए
वेख वेख पाखण्ड सी तेरा, मन मेरा भरमाया सी
जिगर दा टुकड़ा पुत्र चीर कर के मैं भेंट चढ़ाया सी
हूँण मैं लाँहवा शीश तेरा ते वेखी आद कंवारी नू
कित्थे गई ओह माता तेरी देखा सिंह सवारी नू
लहू तो केसर करदी जेहड़ी माँस कड़ाह आ बनादी ए
हड्डियाँ तो जो गिरी छुआरे लाचिमा लोंग दिखा सी
जीवनदान जो देंदी सो माता विच प्राण जो पांदी सी
शक्ति किधर गई आज तारा जीदीयाँ भेंटा गाँदी ए
नीच घराने विच पपणे जाके धर्म गंवाया ई
मरवा के तू पुत्रा मेरा दस हथ की तेरे आया ई
तारा तू अते माता तेरी डाढ़ा जुल्म कमाया ए

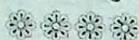
बनके डण पुत्र नू दीहा विच सभा दे खाया ए
भगतां दा अपमान औह दाती कदे होण न दें दो ए
तारा विच प्रवेश आ कीता मुखों बोल एह कैंहदी ए
जगदम्बा झूठी नहीं राजा झूठे दुनिया दारी ए
चंडमुण्डते शुम्भ निशुम्भ जद दुनियाँ विच हंकारया-सी
खण्ड दी धोर दी नाल इकपल दी विच सिगारेया सी
रक्त बीज दा खून पीणझट कालका रूप माँ धरिया सी
अष्ट भुजा फिर बण के वैशनों भगता ताई उवारेया सी
दिल चों कढ़ अभी नान राजेया मन तौं मैल हटालै तू
नीवा होके दाती अग्गे गल विच पलड़ा पालै तू
नमस्कार कर चरनां विच मुखों जय जयकार बुलालै तू
कृपा आप करे महामाया फेर पुत्र नू पालै तू
ममता दे वश हो राजे झट अक्खियाँ नीर बहाया ए
जगदीया जोतां वाली दा फिर राजे ध्यान लगाया ए
रगड़े नक्क ते शीश झुकाए गल विच पलड़ा पाया ए
आके जट कन्जक इक कैंहदी होश राजेया आया ए
करले दर्शन हरिचन्द राजा भावे होर अजमाले तू
जीवे चांहदा है दिल तेरा दिल दा भरम मिटालै तू
जे तलवार खण्डे नाल खेडे खेडेन न् त्यार मैं हाँ मैं
अभीमान जो छड्डे राजा भल्ला बखशण हार हाँ मैं
मंगे पुत्र हजार जे राजा विच झोली दे पावां मैं

मैं अपने प्यारे भगता घर जा जा वूट लावाँ मैं
हत्थे जोड़े ते नक्के वो रगड़े राखे भुल बखशाइयाँ ने
तारां कर दी बेनतीयां भगतां ने भेटां गाईया ने
तारा कैहणी स्वामी हुण प्रसाद तुसी ले आओ जी
नाले पण्ज परसों तरसों देर जरा न लाई जी
जगदम्बा नु भोग लवाँ के फिर घुड़साल बलजाओ जी
घोड़े नु प्रसाद खिलाके राजकुमार बुलाओ जी
इक है भोग तुहाड़ी खातिर ते पजवां भोग मैं खाना ए
बाकी साबी प्रसाद एह वड्डी संगता चर नूं जाणा ए
राजा ने माँ अम्बा नू पहले जा भोग लवाया ए
दूजा भोग घोड़े न पाके विच मन दे मुस्काया ए
घोड़ा दिस्से बिल्कुल ओहियों हत्थ ला के हरशाया ए
महलाँ विच आवाज आ मारी राजकुमार झट आया ए
सब मिलके प्रसाद ने खांदे दिल फुलया न समाया ए
'लालचन्द गुसाँई' ने पूरा इतिहास सुनाया ए

वार्ता

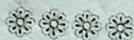
सन्तो बोलो जय माता दी सब भगत बोले जय माता दी । तब आदि शक्ति जगत जननी माता जगदम्बा कहने लगी ए राजन और सुन यह बात गौर से सुनने वाली है और इसी कारण यह सारी लीला मैंने रचाई है और जब घोर कलयुग आयेगा तब लोग

मुझे खास कर वैशनूं माता के नाम से मनायेंगे और मेरे जगरातों में खास कर जो सन्त भगत इस तारा रानी की कथा कहेंगे या सुनेंगे उन सबकी मनोकामनायें अवश्य पूरी होंगी । माता ने कहा कि भगत जनों आगे का प्रसंग सुनो ।



कबूतर जा जा (मैंने प्यार किया)

जा जा जा, तूं भगता जा जा जा
आई है दरबार से चिट्ठी भगता शुक्र मना
तूं दर पे जा जा जा, ओ भगता जा जा जा
शेर सवारी मां की भगतों सबको प्यारी लगती हैं?
मईयां के दरबार की ज्योति देखो हरदम जगती है
मईया खाली झोली भरती जिसने याद किया....
मन ही मन में माँ दाती को जो भी जान चुका हो-2
वो तेरा तो बने दास जो शक्ति मान चुका हो
दाती दर पे खुद ही बुलावे कर दे शुक्रिया....
यहां भी देखो दुर्गा भवानी हमको नजर वोह आवे-3
लेकिन दिल में श्रद्धा बसाके जो भी नाम ध्याये
सूरज भव से पार तरावे जो भी दास हुआ....



ओ मेरी चांदनी (चाँदनी)

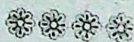
पकड़ूंगा तेरे आंचल को, दूर करूँगा हलचल को
मैंन इस दिल पे लिख दिया तेरा नाम
शिव दासनी, ओ शिव दासनी
नाम लिया तो डरना क्या-1
फिक्र कोई अब करना क्या
नाम जपूंगा मैं तो सुबह-शाम....
जिसने तेरा नाम लिया-2
उसको तुमने थाम लिया
मुझको भी माँ शेरां वाली थाम....
दिल में नाम बसाया है 3
चरनों में सूरज आया है
जग से अब कुछ नहीं मुझको काम....



तेरे बिन जी न सकूँगा माँ (दिल)

हो मईया मईया, आजा तू मईया
मैंने तुझे याद किया तेरा ही नाम लिया
क्या मेरी जिंदगी तेरे बिन मईया मेरी
तेरे बिन जी न सकूंगा....

खुशिओं का तोहफा दिया तूने मुझको।
मैंने शेरांवाली क्या दिया है तुझको
आया न तेरे दर, मांगा न कोई वर
ओ अंबे माँ वारे-2 जां मैं तो सदा पल
धोखे में फसां....
आई जब अकल आया तेरे दर को-2
पहचान लिया है सबकी नजर को
अब तो माँ ठुकराना ना दर से दूर भगाना ना
मैं तो झुका चरनों में खड़ा करदे तू शेरांवाली
अपनी कृपा.....
खुशी मिली मुझको किया जब माफ है-3
सूरज का दिल भी हो गया साफ है
अपना दास बना ले माँ, गले लगा ले माँ सब कुछ
छोड़ा, नांता जोड़ा, दर्शन दिखाये हैं दिल की दुआ...



हमने घर छोड़ा है (दिल)

सब कुछ ही छोड़ा है नाता अब जोड़ा है
तेरे दर पे आयेंगे कुछ और नहीं चाहेंगे
तेरे बिना जीना पड़े वो दिन कभी भी न आए
देख लिया दुनिया को सदा उल्टी ही राह दिखाये

दर से प्यार किया है मां हर वार किया है
तेरे चरनों आकर ही किस्मत को जगायेंगे
दूर हुआ अब गम है दर जो पकड़ लिया तेरा
तेरे सिवा अब दाती कोई नहीं है मेरा
दिल का साफ बना दे, माँ भगवती को जगादे
दीदार तेरा हम करेंगे चरनों में झुका दें....
सूरज है तेरा पुजारी महिमा दिन रात गा रहा है 3
तेरे दर पे जीवन, मैं तो सफल बना रहा हूँ
मां की शेर सवारी, तूं सबकी नईया तारी
अब मेहर हुई है तेरी दर पे भी हम आयेंगे.....



मेरे रंग में (मैंने प्यार किया)

दुख और दर्द मिटाने वाली तू शक्ति है दुर्गा भवानी
दर पे खड़ा हूँ हे महारानी
अपनी कृपा से मां तार दो, तार दो ना
चरनों में झुकते आकर सारे 1
तेरे दर के हैं अजब नजारे
दूर-दूर से संगत आई, श्रद्धा की भेंट साथ है लाई...
तेरी गुफा में मैं भी आया 2
इस दुनिया का हूँ ठुकराया

मईया मुझको छोड़ न जाना

दर पे खड़ा हूँ दर्श दिखाना अपनी.....

मेरे दिल में हलचल क्यों है 3

दूर मां तेरा आंचल क्यों है

मैं भी सेवक तेरा माता

मां बेटे का सच्चा नाता....

सूरज कतारों में आके खड़ा है 4

तेरे चरनों में कब से पड़ा है

दिल की आस बुझाना दाती, अपने गले लगाना दाती...



मेरे हाथों में नौ-२ (चाँदनी)

सबके हाथों में पूजा की थालियां हैं

शेराँवाली तेरी रहमत निरालियां हैं

तेरे दर पे जो संगते हैं कर्मा बालियां हैं

तेरा सुन्दर है भवन बड़ा सोहणा है

सारे जग से निराला मन मोहना है

जपले जो तेरा दीदार उसी को होना है.....

तेरी शेर की सवारी 2

क्या बात है माँ

तेरे आगे भला मेरी क्या औकात है माँ

चरनों में आज तुझ से मुलाकात है माँ.....

जब भगतों पे मेहर तूं करती है 3
सब खाली झोलियां भरती है
झुके श्रद्धा से दर तेरे संकट हरतीं है
खड़ा सेवकों में सूरज सवाली है 4
भोली-भाली दाती जग की रखवाली है
ना अब तड़प तूं दे दर्शन मां शक्तिशाली है



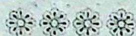
दिल दिवाना (मैंने प्यार किया)

दिल दिवाना, बिन दर्शन के माने ना
मैं सेवक हूँ, ठुकराने से भागे ना
माँग रहे हैं सभी मुरादे माँगू दर्शन तेरा 1
तेरा दर है बड़ा प्यारा यहां कौन है मेरा
इसके सिवा दिल देवे मां से चाहे ना.....
शेराँ वाली भवनां वाली अपनी दास बनाले-2
सच्ची श्रद्धा से दर आया गले से आज लगाले
द तेरा तो कभी न छोड़ूं अम्बे मां.....
सूरज तेरा करके दर्शन जीवन सफल हो जाये 3
लिखने का वर दे ऐसा मन न हटने पाए
पड़ा रहूंगा चरनां में दिन रैना....



एक दो तीन (तेजाब)

दुखिया या दीन, दुर्गा भवानी माँ आया तेरे दरबार में
कटे घोड़े के शीश को जोड़कर अपने दास के दुख हरोगी
संकट मुझ पर आया कड़ा......
ज्वाला मां तेरी परीक्षा करे जो
उसको मां दातिये नीचा दिखा दे
नहीं तो मेरा सिर भी तेरे हवाले
अपने भगत की लाज बचादो
पापी का पापों का भर गया घड़ा......
जगदायाँ जोता वाली मईया ने
घोड़े के शीश को जोड़कर दिखाया
जोतों के ऊपर पानी भी डाला
सूरज के उनको बुझा नहीं पाया
सोने का छत्र अकबर का चढा....



याद कुछ तेरी (नगीना)

आजकल दिल में है इक अजीब सी खुशी
चैन मिलता है मुझे दर्शन पाने बाद
हर साल दर पे मैं तो आता रहूँ
भूल जाता हूँ गम वापिस आने के बाद

अपने चरनों में मुझको बिठाले तू मां 1
आये दर पे गले से लगा ले तू मां
सेवक नाम तेरा जो भी रटता रहे
पाये हर वाद खुशी नुण गाने.....
शेरांवाली तेरा सुन्दर दर है बड़ा 2
आज चरनों में तेरा दास खड़ा
है दीवाना हुआ प्याला पी नाम का
अच्छा लगता न कुछ नाम छाने.....
माँ की शक्ति महान पूजा करे संसार 3
सूरज को करती है भंवर से पार
दूर भगतों हो जाती हैं सब बीमारियाँ
तेरे दर का प्रशाद खाने.....



तू कल चला जाएगा (नाम)

दीदार नहीं हो पाएगा तो मैं क्या करूंगा
अगर चैन नहीं आयेगा तो मैं क्या करूंगा
बैठ गया हूँ चरनों में अब न खाली जाऊंगा 1
बैठा रहूँगा जब तक ना दर्शन तेरा पाऊंगा
मेरा दाम निकल जाएगा......
आया हूँ बड़ी दूर से लम्बा रास्ता पार कर
मैं तो बच्चा तेरा हूँ जीवन का सुधार कर

गम दिल को कोई खाएगा.....
देख निराली शक्ति को दर पर अब तो आ बैठा 3
मैंने धोखे खाये हैं धूनी अब रमा बैठा
यहाँ कोई जुल्म ढ़ायेगा.....
तेरा चरनों में तो अब जिन्दगी बिताऊंगा 4
दर्शन करने के बिना वापस कैसे जाऊंगा
कुछ सूरज को भाएगा.....



अम्बिका ओ अम्बिका.... (नगीना)

अंबिका ओ अंबिका हम दीवाने तेरे नाम के
तेरे दर पें हम तो बैठ गए अब दिल को थाम के
दीदार के बिना ना वापिस जायेंगे 1
गुफा के आगे धूनी को रमायेंगे
प्यार अगर न तेरा मईया पायेंगे
बिना मां तेरे सेवक बोलदे हम किस काम के.....
करतार है दिल यहाँ से जाऊं ना 2
दुनिया धोके वाली धोखा खाऊं ना
मोह माया का चक्र अब तो पाऊं ना
हमें तो दे दे दाती प्याले सच्चे पीयें जाम के......
सूरज तेरे दर पे खड़ा है 3

हाथ जोड़कर चरणों में खड़ा है
तेरा ही दरबार सब से बड़ा है
शक्ति शाली दुर्गा हम तो सेवक अब इस धाम के...



जग कल्याणी (आज का अर्जुन)

दुर्गा भवानी हे जग कल्याणी
अपना बनाके ठुकराना ना
वो सुन्दर है दरबार मिले सबको सहारा
तुझे श्रद्धा से पुकारा है अम्बे
नईया तारदे अपना प्यारा दे कारज सार दे अम्बे
तेरा मैं सेवक हूँ छोड़ न जाना 1
दर पे खड़ा हूँ गले से लगाना
मेहर करदे खाली झोली भर दे रूठ के हमसे चली जाना ना
आया दरबार तेरी बोलें जै जैकार कर दाती उपकार...
तेरे चरनों में रहके जिन्दगी गुजारूंगा 2
सूरज काम क्रोध को मन से मैं मारूँगा
हो कर पूरी आस बैठा चरनों के पास
और अब मुझे तड़फाना ना

माँ का मंदिर सदा लगता लंगर
आया गुफा के अन्दर हे अम्बे.....



शेराँवाली मां (कयामत से कयामत तक)

शेराँवाली मां को जो भी याद करेगा
चरनों में सच्ची फरियाद करेगा
अम्बे मईया तो पार लगा देगी
सबकी बिगड़ी तकदीर भी बना देगी
दर तेरे आ गए गुन तेरे गा गये 1
नाम मां ध्याके तेरा, सारे फल पा गये
जीवत वोह अपना आबाद.....
जो भी तुझे जानता हो-2
सही सही पहचानता हो
भव से वोह पार लगे शक्ति जो मान हो
नास्तिक का तो जीवन बरबाद.....
सूरज तो भिखारी है 3
दर का पुजारी है
तेरे दरबार में आया आस ही तुम्हारी है
नाम तेरा पहले काम जो बाद करेंगा.....



तेरे मंदिरों में अमृत

तेरे मंदिरों मे अमृत बरसे मां तेरे मंदिरों में
तेरा भक्तों के मन की प्यास बुझी
अब रूह किसी की न तरसे मां
'तेरे मंदिरों में......

भक्ति के सागर में भक्तों ने आज लगाए गोते
इस अमृत में भीग के कागा हंस है दिन में होते
भगत करें दर पे तेरा, इन्तजार शेराँवाली करदे
नईया पार

सेवक जो दर पे आने लगे 1
झोलियों को भरके जाने लगे
खाली कोई दर से जाता नहीं
चैन कहीं और मिल पाता नहीं
भगत जो दर पे आते हैं, तेरा नाम ध्याते हैं
पूजा कर तेरी, सुख पाते हैं
अम्बे रानी दे दे अयना तू प्यार....

सच्चा यही तेरा दवारा है 2
खुला सदा ही भन्डारा है
शेर की सवारी मईया अच्छी लगती है
नाम की खुमारी दिल में है जगती
शक्ति तो तेरी निराली है शेरां वाली बड़ी भोली भाली है

भगतों की माँ तू रखवाली है
भरदे तू जिंदगी में सदा बहार
सूरज तो दर पे आके खड़ा 3
भवन तेरा सुन्दर प्यारा बड़ा
असुरों को पल में मार दिया
भगतों का उद्धार किया
अम्बे रानी भगतों से प्यार करे
मईया तो सबको ही पार करे
जो दिल से इजहार करे
मैं भी आया श्रद्धा से माँ दरवा......



चरणों में शीश झुकायेंगे

माँ से प्यार करने वाले दुनिया से डरने वाले
चरनों में शीश को झुकायेंगे
शेरांवाली दर से सब कुछ पायेंगे
जो न पूजे तेरे दर को ऐसा कोई इन्सान नहीं 1
तेरे दर पे सब हैं बराबर गरीब नहीं धानवान नहीं
जगमग जोत जली है बुझाने से न बुझी है
अकबर बादशाह हारा था मानी माँ के सदके जायेंगे
ध्यानू भगत ने दर पे माता शीश को काट चढ़ाया था-2
शेरांवाली न कृपा से चमत्कार दिखलाया था

उसकी महिमा कोई न जाने हम तो गुण गा थेंगे
दर के सुन्दर नगरे दर पे खड़े हैं सारे
पांडवों ने भवन बनाया दूर से चमक मार रहा 3
सूहा चोला अंग विराजे भगतों को तार रहा
वाहवा शेर सवारी लगती बड़ी प्यारी
सूरज है दर का भिखारी माँ से भूल
बख्शायेंगे....



तेरे मेरे बीच में सच्चा है ये बंधन

तेरे मेरे बीच में सच्चा है ये बन्धन पुराना
माँ ने भी जाना, बेटे ने भी जाना
माँ डोर खींचे दास दौड़ा चला आए 1
कच्चे धागे से वोह बंधा चला आए
मईया की शक्ति को सबने माना.....
दाती तेरी चरनों में जिन्दगी गुजारूँ 2
दिल में बसी है मूरत कैसे उतारूँ
बन गया मैं तेरा दीवाना.....
शुद्धता से तेरी दाती पूजा करूँगा 3
जब तक माँ है संग, कभी न डरूँगा
झूठी मोह माया से बचाना....

सूरज पे कर दो नजरे करम माँ 2
तेरी गोदी में निकले मेरा ही दम माँ
दर तेरा अम्बे है सुहाना.....



चिट्ठी आई है

शेराँवाली माँ, दुर्गा भवानी माँ
होती सबपे सहाई है
चिट्ठी आई है आई है चिट्ठी आई है
चिट्ठी आई है भवन से चिट्ठी आई है
द्वार से कोई जाये न खाली 1
दुर्गा तेरी महिमा निराली
जीवन को माँ सफल बनाये
चिट्ठियाँ डालकर घर से बुलाए
जगमग 2 जग रही ज्योती
सदा सहाई माँ है होती
याद करते हैं और दर पे आते हैं
शेराँवाली मईया का दर्शन पाते हैं चिट्ठी....
मईया की है शेर सवारी 2
तर जाए आवे जो इकवारी
बच्चों से मईया दूर न होना

टूट न जाए सपना सलोना

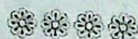
तेरा दर्शन मैं पा जाऊँ
द्वार पे आके भेंट गाऊँ
भर देती है खाली झोली
दर पे खड़ी है भगतों की टोली
संगत आती है गुण तेरे गाती है
श्रद्धा से तेरा दीदार पाती है चिट्ठी.....
कलयुग तो है घोर अन्धेरा 3
तेरे बिना अब कोई न मेरा
रिश्ते नाते सभी हैं झूठे
मोह माया से फिर भी प्यार न टूटे
नाम की लग्न लगा दे दाती
प्रेम मेरे दिल बसादे दाती
सूरज आया है सबका ठुकराया है
सहारा बिना तेरे कहीं भी न पायी है चिट्ठी....



मईया देके आवाजें बुला रही है

ऐ मेरे हम सफर कर जा इन्तजार
बुला रही है देके आवाजें मईया प्यार से
खत्म जुदाई का मौसम दो पल का महमान 1

आया जो चरनों में पूरे करेगी अरमान
प्यार से जपले, तारेंगी नईया मईया.....
किस्मत तो खुल जाएगी दर पे ही आकर 2
खुशी से वोह घर लौटेगा हर खुशी पाकर
सुन्दर द्वारा आप बुलाए......
जाल तो मोह ममता का मईया दूर करे 3
श्रद्धा से जो भी जपता, संकट माँ तो हरे
कभी कोई न आने दे वोह....
सूरज आज बना है दर का एक दीवाना 4
शक्ति से तेरी बढ़कर और न कुछ भी जाना
मेर घर में शांती दे दे मईया....



तेरे दर से माँ...

कह दो कि तुम हो मेरी वरना
जीना नहीं मुझे है मरना
देखो मईया न फिर ऐसे करना
ध्यानू भगत चरनों में पड़ा है
पीछे अहंकारी अकबर खड़ा है
पुकारता हूँ तुझको हे सबकी माता अब जरा न देर करो।
वो लोग बड़े ही बदकिस्मत जो आज न निकले घर से
तेरे मन्दिरों में.....

नाम रस की इस धारा में आत्मा है जब बहती
जग की नश्वर चीजों की फिर तलब उसे न रहती
कहीं और ये मस्ती मिलती नहीं
जो मिलती है तेरे दर से माँ
तेरे मन्दिरों में.....

इन छीटों से जन्म जन्म की मैल सभी धुल जाती
मिट जाता अन्धकार दिलों का आँखें हैं धुल जाती
शैतान भी साधु बनते सुने
तेर नाम की मस्त लहर से माँ
तेरे मन्दिरों में.....

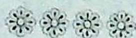


दाती ने तार दिया जग सारा

मेरी दाती ने तार दिया जग सारा
भक्त बोल रहे अम्बे दा जयकारा
जिसने जयकारा सच्चे दिल नाल बोलया
ओदी तकदीर वाला बुआ दाती खोलया
अपने भक्तां लई माँ बैठी खोल भंडारा
मेरी दाती ने.....

भक्त ध्यानूँ तू तां सब नूं माँ तारया
नन्द लाला जी तो सुदामा कष्ट निवारया

बुआ रूप बन दाती कीता खेल न्यारा
मेरी दाती ने.....
नूर उत्ते हाथ सदा मेहर वाला रख माँ
मेहर दी नजर कर मेरे बल तक माँ
हाथ जोड़ बैठा दातिए अजमल किए तेरे द्वारा
मेरी दाती ने.....



शेराँवाली माँ दी जोत जगा लै

शेराँ वाली मैया दी तू जोत जगा लै
दिल दीयाँ लगीयां तू मैया नूँ सुनालै
तैनूं मिलेगा दर्शन माई दा दर शीश झुकाई जा
कर लै नजारा माँ दा हुनदी माँ सहायी है
एको है था जित्थे झुका दो खुदायी है
श्रद्धा दे नाल माँ दा नाम ध्यालै
शेराँवाली मैया.........
दे उत्ते माँ दी हुनदी जय जयकार है
जादे ने पुजारी जित्थे माँ दा दरबार है
करेगी मेहर आज गुण माँ दा गा लै
शेराँ वाली मैया.........
कण कण विच अम्बे मैया दा बसेरा है
हर बेले दर माँ आसरा तेरा है

चला माँ दे दर भाग अपना जगालै
शेराँवाली मैया.........
जिन्दगी निमाणी मेरी होके लै लै डोल दी
कसो है दो वाँ विच कुछ नईयों बोल दी
दिल विच भाँ दी तस्वीर बसा ले
शेराँवाली मैया.........
दुर्गा भवानी माँ दा अजब नजारा है
मेरे उत्ते जेड़ा माँ दा प्यारा है
सारा जग छोड़ अज ऐनू अपनालै
शेराँवाली मैया........



इक मन्दिर है गुफा में

इक मन्दिर है गुफा में जहाँ माँ की मूरत है
जो दुनिया से है न्यारी ऽ ऽ ऽ ममता की मूरत है
चारों तरफ है उस मन्दिर के
ऊँचे ऊँचे पर्वत प्यारे 'जय माता दी'
जिसकी किस्मत में लिखा हो,
वो जा पाये माँ के द्वारे 'जय माता दी'
जिस पल जाने का तय कर लो वो ही सफल महूर्त है
एक मन्दिर है गुफा में....
माँ के चरणों में गंगाजी

रुन झुन रुन झुन बहती जायें
बहते-बहते पावन गंगा जगदम्बे
की महिमा गाये 'जय माता दी'
प्रभु की छटा है निराली लगती खूबसूरत है
एक मन्दिर है गुंफा में.......
बारह महीने भक्तों का वहाँ
आना जाना रहता है
हर कोई मधुरस में डूबा
जय माता दी कहता है
जिस पर दया हो मैया की उसको किसकी जरूरत है
एक मन्दिर है गुफा में.....



जय माता दी बोल जय माता दी

नवरात्रि के नौ दिन आये देना माँ नौ वरदान
ऐसी कृपा करना अम्बे जग का हो कल्याण
पहला वर मैं झूठ न बोलूँ
पाप पुण्य को मन से तोलूँ
विपदा आये लाख हजारों
फिर भी कभी न मैं डोलूँ
तीजा वर देना हे मैया
मिट जाए अववान

ऐसी कृपा करना अम्बे
जग का हो कल्याण
रहे आनन्द सदा मेरे मन में
यही है चौथे वर की अपेक्षा
मिल जाये मुझे पाँचवे वर में
परम भक्ति की पावन दीक्षा
और छठा वर ऐसा हो कि
लगा रहे तेरा ध्यान
ऐसी कृपा करना अम्बे
जग का हो कल्याण
ये वर में सातवां दो जगदम्बे
क्रोध कभी न मुझको आये
आठवाँ वर दो अन्त समय में
अंखियाँ तेरा दर्शन पायें
मोह माया से हो छुटकारा
दो नौवां वरदान
ऐसी कृपा करना अम्बे
जग का हो कल्याण



मैया तेरी पायल बोले

मैया तेरी पायल बोले छम-छम, छम-छम

वेद पुराण का अमृत घोले

मन में ये हरदम.....हर.....दम

मैया के इस नृत्य से उपजे

काव्य के रस ये सारे

मानव के व्यवहार के लिए

रस उनमें संचारे

बने नृत्य से सुर ये सारे

शुद्ध निषाद पंचम-पंचम छम-छम

मैया तेरी पायल.....

सरस्वती के रूप में

अम्बे वीणा तूने बजायी

साधक आराधक के मन में

तेरी गूँज भायी

माँ के तेज से

भक्तों के मस्तक के चमचम

मैया तेरी पायल......

जल, थल, अम्बर तेरी माया

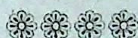
तुझसे धूप और है छाया

प्राणों की है तू ही शक्ति

तेरी कृपा से पाया

नैनों का तू ही प्रकाश

श्रेष्ठ सर्व उत्तम उत्तम
मैया तेरी पायल.....



मईया तार दे

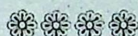
मईया तार दे अम्बे तार दे 2
मईया तार दे तार दे माँ हमें तार दें
इतने पाप किये हैं जितने हैं अम्बर में तारे
अब तो साँसों की हर धड़कन मैया यही पुकारे
मईया तार दे.....

माना भूल गया था तुझको
माया के मोह में अम्बे
तूने भी तो याद किया ना
मुझको ऐ जगदम्बे
मैं ही आया तू ना आयी
ये कैसा है नाता
बीच भंवर में डूब न जाऊँ
पार लगा दे मांता
मईया तार दे......

कितने नाम गिनाऊँ तुझको
ऐ मेरी महामायी

गली का सजना नाता तारा
तारी मीरा बाई
लाज बचाई ध्यानुं की
बनिए की नैया तारी
मुझको भी अब तार दो
अम्बे आयी मेरी बारी
मईया तार दे....
गल बनूँ तेरी राहों की
दाती चरण तेर लग जाऊँ
निर्मल हो जाए मैली काया
और ना कुछ में चाहूँ
माफ करो अब अवगुण मेरे
तेरा लाल कहाऊँ
मुझको ऐसे रंग में रंग दो
नित दिन मैं ये गाऊँ
मईया तार दे.....
सच्चे मन से दर जो आए
भर दे उसकी झोली
ऊँच नीच का भेद न रह जाए
मैया मेरी भोली
कल्याणी कल्याण करे

वरदानी सबको वर दे
आसां रानी सबकी आशा
पल में पूरी कर दे
मईया तार दे....



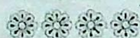
पत्ते-पत्ते च है मैया जी दा डोरा

पत्ते-पत्ते च है मैया जी दा डोरा
नी फुल्लां नूँ ना छोड़ मालने
ओ हर कली च है दाती दा बसेरा
नी फुल्ला नूँ छेड़ मालने
मोतिये च माई देवा, गेंदे विच शारदा
कलियाँ च काली बसे, गट्टे विच कालका-2
है गुलाब विच-गौरजाँ दा डेरा
नी फुल्लाँ नूँ.....

चम्बे च चामुण्डा फुल्लां बिन फुलारानी ए
अनार विच अम्बे, जिनूँ कहेन्दे कल्यानी ए 2
मैंनूँ गुन्दे दे 2 नी श्रद्धा वाला सेहरा
नी फुल्लाँ नूँ ना छेड़.....

ओ गंगा ओदे चरणां विच करम दी वगदी

जोत है नूरानी, विच जलथल जगदी 2
दूर कीता जिने जग दा हनेरा
नी फुल्लाँ नूँ ना छेड़ मालने
हर कलीं च.....



चढ़ाऊँ क्या तुझे मैया ?

खड़ी हूँ सेवा करने को, चढ़ाऊँ क्या तुझे मैया
अगर मैं दूध चढ़ाती हूँ
तो वो बछड़ों का झूठा है
इसलिये दिल रुक जाता है चढ़ाऊँ क्या तुझे मैया
अगर मैं जल चढ़ाती हूँ,
तो वो मछली का झूठा है
इसलिए दिल रुक जाता है चढ़ाऊँ क्या तुझे मैया
अगर मैं फूल चढ़ाती हूँ,
तो वो भँवरों के झूठे हैं
इसलिए दिल रुक जाता है चढ़ाऊँ क्या तुझे मैया
अगर मैं दिल चढ़ाती हूँ
तो वो पापों से भरा है
इसलिए दिल रुक जाता है चढ़ाऊँ क्या तुझे मैया
अगर मैं पैसे चढ़ाती हूँ,

तो वो पुजारी ले जाते हैं

अगर मैं भेंट चढ़ाती हूँ,

तो वो मैया तुम्हारी है

इसलिए दिल खुश होता है चढ़ाऊँ भेंट तुम्हें मैया–



मैं पुजारी तेरे द्वार दा

तू माता है ज्वाला शहर दी, मैं पुजारी तेरे द्वार दा....

आ तुझे मेरे गंगा जल का गड़वा

स्नान कराऊँ दोनों हाथ जोड़ के, मैं पुजारी तेरे.....

आ तुझे मेरे केशर कौली

मत्थे तिलक लगावाँ दोनों हाथ जोड़, के मैं पुजारी....

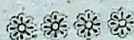
आ तुझे मेरे पुष्पाँ दाँ काँड़ू

भोग लगाऊँ माता दोनों हाथों जोड़ के, मैं पुजारी....

आ तुझे मेरे लाल-सुआ चोला

भेंट चढ़ाऊँ माता दोनों हाथ जोड़ के, मैं पुजारी.....

तू माता मेरी ज्वाला शहर दी, मैं पुजारी....



माता तेरा शेर देखया

शेर देखया गुफा दे आगे गजदा, माता तेरा शेर देखया

शेर तेर दी की है निशानी 2

मत्थे उत्ते तिलक, गले विच गानी

देखया गुफा दे कोलों लंघदा माता तेरे शेर देखया....

पहाड़ तेरे दी की ए निशानी 2

तिन ओदे किंगरे ते आद भवानी

रास्ते विच 'गर्भ' जून लंघदा माता तेरा शेर देखया....

गुफा तेरे दी का ए निशानी 2

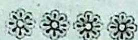
छोटी 2 बर्फ ते गिटटे गिट्टे पानी

चरणां विच नीयर पया वगदा, माता तेरे शेर देखया....

माता तेरी दी की ए निशानी 2

केसर तिलक ते कपड़े बदामी

मत्थे ऊँचे मुकुट है सजदा, माता तेरा शेर देखया.....



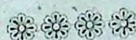
रूप धारा कन्या दा

जदों खेलदी ते छम-छम वजदा

माँ दे हथ चूड़ा रौगला.....

माँ दे नक नथ चमके, कन्ने चमके हत्थाँ दे लाला मेंहदी
लाल सुआ चोला पहन के मैया शेर दी सवारी बैहदी
माँ सबनाँ दियां दियां जाने, ते रूप धार कन्या दा
जदों खेलदी ते छम-छम वजदा.....

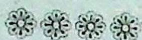
मावाँ नूँ तू पुत्त दें दी, भैनां नूँ भरवाँ दीयाँ जोड़ियाँ
आशा धार जेड़ें आंवदे माँ भरदी ओनां दीयाँ झोलियाँ
ते रूप धार कन्या दा माँ सबनां.....
जदों खेलदी ते छम-छम वजदा.....
सावन दा महीना आ गया पींघां पिहलां दे उत्ते पाके
रल मिल झूठन सखियाँ सारा भवन हुलारे खाके
ले रूप धारा कन्या दा माँ सबनाँ
जदों खेलदी तें छम-छम वाजदा.....



माँ ने कुण्डा ला लिया

मैं आया दरबार ते भगतों
माँ ने कुण्ड़ा ला लिया
रानूँ बचड़ा रो रो पुकारे
खोल कुण्डा तूँ बक्श द्वारे
डाडा हुआ लाचार, रे भक्तों
माँ ने कुण्ड़ा ला लिया.....
मावाँ हुन्दिया ठण्डिया छावां
तेरा दर छोड़ मैं छिस दा जावाँ
मिल के करो पुकार
मिलके करो जयकारा रे भगतो

माँ ने कुण्डा खोलिआ 2
माँ ने कुण्डा खोलिआ 2



पूजा करे संसार

पूजा करे, पूजा करे
पूजा करे संसार माँ तेरी पूजा करे....
तैनू पूजन ब्रह्मा जी आए 2
गायत्री जी नूं नाल लियाए
देखो बोलन जै जैकार माँ तेरी पूजा करे
पूजा करे संसार माँ तेरी.....
तैनूँ पूजन शंकर जी आए
पार्वती नूं नाल लियाए
हो के बैल सवार माँ तेरी पूजा करे
पूजा करे संसार माँ तेरी.....
तैनूं पूजन विष्णु जी आए
लक्ष्मी जी नूं नाल लिआए
करदे शेषनाग फुंकार माँ तेरी पूजा करे
पूजा करे संसार माँ तेरी.....
तैनूं पूजन राम जी आए
सीता जी नूं नाल लिआए

तेरे चरणों में बलिहार माँ तेरी पूजा करे

पूजा करे संसार.....



खोल बहे मन्दरा दे

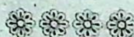
आप दर्शन करन पुजारी–के खोल बहे मन्दरा दे
मन्दरा दे माँ मन्दरा दे......
तेरी जोत तों जावां वारी–के खोल बहे मंदरा दे
मन्दरा दे माँ मन्दरा दे.....
इक दो नहीं कई भगत हजारां बनके खेलोते तेरे
दरते कतारां
के दर्शन वारो वारो–के खोल बहे मन्दरा दें
मन्दरा दे माँ मन्दरा दे....
आँवदे फकीर तेरे दाद दे प्यास तन से लीरां हथ
विच कांसे
पा खैर माँ आदि कुमारी–के खोल बहे मन्दरा दें
मन्दरा दे माँ मन्दरा दे...
गमों मोरे ते लोकाँ दे सताये आन पहुँच तरे दरते माए
असाँ बेखनी शेर सवारी–खोल बहे मन्दरा दे
मन्दरा दे माँ मन्दरा दे....

चन्न तेरे ऐ दूरों आया नाल दिला दें मुन्सफ आया
माँ आया ई पहली वारी–दें खील बहे मन्दरा दे
मन्दरा दे माँ मन्दरा दे....



श्रद्धा से जो आएगा तेरे दरबार

श्रद्धा से जो आएगा तेरे दरबार
मिलती हैं मुरादें होता है बेडा पार
ऊँची ऊँची मैया दे भवन दी पहाड़ियाँ
बोलके जैकारा माँ दा चढ़ तेरे हानियाँ–1
श्रद्धा से.....
मन दी मुरादाँ ऐ पे होणिदियाँ पूरियाँ
आन के सुनावे जो अपनी मजबूरियाँ
श्रद्धा से....
ऋषि मुनियों ने भी भेद नहीं पाया
पल में वो दूर करे कोढ़ियों की काया
श्रद्धा से.....



न्यू रेडियो-ट्रांजिस्टर व टेलीविजन-वीडियो गाइड

रेडियो, ट्रांजिस्टर व टेलीविजन की उपयोगिता इस युग में एक आवश्यकता बन गई है। शहरों में शायद ही कोई घर होगा जहाँ ये चीजें देखने में न आएँ। इस पुस्तक में इनके प्रत्येक पुर्जे का ज्ञान व पुर्जों की सही फिटिंग के बारे में पूरी जानकारी दी गई है। सैकड़ों व्यक्ति इस पुस्तक को मँगाकर पूरे मैकेनिक बन हजारों रुपया कमा रहे हैं। इस पुस्तक की मदद से आप अपना रेडियो-ट्रांजिस्टर व टी॰वी॰ घर में ही ठीक कर सकते हैं। प्रत्येक के लिए उपयोगी। आज ही मँगावें।

पुस्तक का मूल्य 25 रु॰ डाक खर्च सहित

सचित्र योग आसन एवं स्वास्थ्य

इस पुस्तक में व्यायाम के 84 आसनों के कायदे, कौन-कौन से आसन किस अवस्था में करने चाहिएं और व्यायाम करने से क्या लाभ होते हैं ? और कौन-सा आसन कौन-सी बीमारी को दूर करता है- यह सब बातें इस पुस्तक में 84 आसनों के चित्र देकर बहुत ही सरल रीति से बताई गई हैं। हम डंके की चोट से कह सकते हैं कि रोजाना योगासन करने से मनुष्य कभी भी बीमार नहीं पड़ सकता।

मूल्य 25 रु॰ डाक खर्च सहित

लैटेस्ट कुकिंग गाइड

यह किताब व्यंजन शास्त्र की अपूर्व किताब है। इस पुस्तक में भांति-भांति के भोजन, अचार, मुरब्बे, चटनी, रायता, खीर, हलुवा, पूरी, कचौड़ी व खाने की भांति-भांति की मिठाईयां, पापड़, बड़ियां, कुल्फी, सूखे मुरब्बे अचार बनाना। तरह-तरह के पकवान बनाने के सरल तरीके दिए गए हैं। मूल्य 25 डाक खर्च सहित

वी॰ पी॰ पी॰ द्वारा पुस्तकें मगाने का पता

लक्ष्मी प्रकाशन, 4734, बल्ली मारान, दिल्ली-6

भरपूर सेहत प्राप्त करें।
जीवन खुशहाल बनाए।

अगर आप कई जगह से इलाज करवाकर निराश हो चुके हैं तो हमारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हाशमी दवाखाने में चार पुश्तों से चले आ रहे कीमती व कामयाब नुस्खो का इस्तेमाल करके जीवन में खुशियां भर सकते हैं। गलतियो के कारण या किसी समस्या के कारण, मन में यदि किसी प्रकार की ग्लानि, शंका या घबराहट है तथा मन से चाहते हुए भी अपने जीवन की खुशीयों से वंछित है। दिल की बात किसी से कहते हुए शर्मातें है। तो समझों आपको हाशमी दवाखाना अमरोहा की सेवा की जरूरत है। हमारे यहां प्राचीन विधियों पर आधारित वही नुस्खे, जड़ी-बूटियों, खनिजों, द्रव्यों व बहुमूल्य भस्मों पर शोध कर नवीन वैज्ञानिक पद्धति द्वारा तैयार किये जाते हैं। जिनका प्रभाव काफी असरकारक, बेमिसाल एवं भरपूर शक्तिशाली होता है। जीवन को मधूर व अनन्दमय बनाने के लिए शर्म, संकोच छोड़कर आज ही सही परामर्श व सफल इलाज के लिए मिलें या लिखें। पत्र व्यवहार नाम पता गुप्त रखा जाता है।

स्थापित-1929

हाशमी® दवाखाना

मौह0 काजीजादा, अमरोहा-244221 जे.पी. नगर (उ0प्र0) इंडिया
फोन :05922-262417 फैक्स :250207
स्वंय आकर मिलने वाले रोगियों के लिए रास्ता दिल्ली से दूरी 131 कि.मी. और मुरादाबाद से दूरी 37 कि.मी. (दिल्ली और मुरादाबाद के बीच में अमरोहा स्थित है।)